स्वच्छ जल जल–कृषि के लिए विस्तार पद्धतियां

आर.सुरेश*, एन.वी. सुजत कुमार** और वी.सेंथिल कुमार***

*आचार्य और प्रमुख, मत्स्य पालक प्रशिक्षण और अनुसंधान केंद्र, तंजावूर 614004

**प्राचार्य , मत्स्य–पालन विस्तार विभाग, मत्स्यपालन कॉलेज और अनुसंधान केंद्र, थूथूकुडी.628008

***सहायक प्राचार्य, मत्स्य–पालन प्रशिक्षण और अनुसंधान केंद्र, तंजावूर 614004

विस्तार पद्धतियां

कृषकों को प्रौद्योगिकियों का अतंरण करने के लिए विभिन्न प्रकार की विस्तार पद्धतियां उपलब्ध हैं। उन्हें मोटे तौर पर निम्न के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है:

1. वैयक्तिक संपर्क पद्धतियां
2. समूह संपर्क पद्धतियां
3. जन संपर्क पद्धतियां

वैयक्तिक संपर्क पद्धतियां

वैयक्तिक संपर्क को इस प्रकार परिभाषित किया जाता है–किसी विस्तार कार्यकर्ता का किसी व्यक्ति अथवा उसके परिवार के सदस्य के साथ किसी निर्दिष्ट प्रयोजन के लिए सीधा संपर्क। वैयक्तिक संपर्क कृषि–भूर्मि अथवा घर के दौरों, कार्यालय में आकर, टेलीफोन द्वारा संपर्क करके, व्यक्तिगत पत्राचार, आदि के माध्यम से स्थापित किया जा सकता है।

कृषि–भूर्मि और घर पर दौरा

यह विस्तार कार्यकर्ता द्वारा किसी कृषक अथवा उसके परिवार के सदस्यों के साथ उसके कृषि–भूर्मि पर अथवा घर में विस्तार के साथ जुड़े एक अथवा अधिक निर्दिष्ट प्रयोजनों के लिए आमने–सामने प्रकार का वैयक्तिक संपर्क है।

कार्यालय में आना

यह कृषक अथवा कृषकों के समूह द्वारा जानकारी प्राप्त करने और इनपुट हासिल करने अथवा कोई अन्य आवश्यक कृषि–संबंधी सहायता प्राप्त करने अथवा विस्तार कार्यकर्ता के साथ मेल–मिलाप बढ़ाने के लिए विस्तार कार्यकर्ता के कार्यालय पर आकर उससे भेंट करना है।

फोन कॉल

यह विस्तार के साथ जुड़े किसी सामान्य अथवा विशिष्ट प्रयोजन के लिए विस्तार कार्यकर्ता और कृषक के बीच फोन पर किया गया संपर्क है।

व्यक्तिगत पत्र

यह विस्तार कार्य के संबंध में विस्तार कार्यकर्ता द्वारा किसी कृषक को लिखा गया व्यक्तिगत और वैयक्तिक पत्र है। व्यवहार रूप में, व्यक्तिगत पत्रों का प्रयोग कृषि संबंधी विशिष्ट समस्याओं, आपूर्तियों और सेवाओं आदि के बारे में कृषकों से प्राप्त प्रश्नों का उत्तर देने के लिए किया जाता है।

समूह शिक्षण पद्धतियां

गांवों की अनेक महत्वपूर्ण समस्याओं का समाधान सामूहिक कार्रवाइयों द्वारा किया जा सकता है। लीगंस (1961) के अनुसार, कोई समूह व्यक्तियों का एक ऐसा निकाय है, जो एक साझे हित के लिए एक–साथ जुड़े हुए हैं। ऐसे ही किसी समूह (जिसके सदस्यों की संख्या लगभग बीस हो) का उपयोग किसी उद्देश्य का प्रवर्तन करने के लिए किया जा सकता है, जो सहकारिता की भावना के साथ चर्चा के माध्यम से सामूहिक निर्णय लेता है। समूह की पद्धतियां हैः–

क. प्रदर्शन
ख. क्षेत्रीय दौरे
ग. बैठकें

प्रदर्शन

जब आप प्रदर्शन द्वारा सिखाते हैं, तो आपको उस व्यक्ति को यह दर्शाना चाहिए कि कोई नया कार्य किस प्रकार किया जाता है, अथवा आप यह दर्शाते हैं कि किसी पुराने कार्य को किस प्रकार बेहतर ढंग से किया जा सकता है। प्रदर्शन की शक्ति इसकी नैसर्गिकता पर निर्भर करती

है, जो तर्क और कारण को प्रस्तुत करने की इसकी स्वाभाविक प्रकृति है। यह आपकी आंखों के सम्मुख ही विद्यमान है। विस्तार दो प्रकार की विस्तार पद्धतियों और परिणामों का प्रयोग करता है। पद्धति प्रदर्शन एक समूह पद्धति है जबकि परिणाम प्रदर्शन एक वैयक्तिक पद्धति है। परंतु परिणाम प्रदर्शन बैठक समूह पद्धति है।

प्रदर्शन की पद्धति

यह भाषा का विकास होने से भी बहुत पहले से शिक्षण का प्राचीनतम माध्यम है। पुरूष अपने बच्चों को सिखाते थे कि शिकार कैसे किया जाता है, पशुओं को कैसे दुहा जाता है। यह एक समूह के सम्मुख प्रदर्शित किया जाने वाला तुलनात्मक रूप से अल्पकालिक प्रदर्शन है जिसमें यह दर्शाया जाता है कि किसी एकदम नई प्रक्रिया को किस प्रकार कार्यान्वित किया जाना है, अथवा किसी पुरानी प्रक्रिया को और बेहतर ढंग से कैसे क्रियान्वित किया जा सकता है।

यह अभ्यास के समान महत्व तो प्रदान नहीं करता है, परंतु यह बताता है कि उसे कैसे किया जाना है। यह कोई प्रयोग नहीं है, परंतु यह शिक्षण का प्रयास है। इसमें विस्तार कार्यकर्ता प्रक्रिया का पद्धति का चरणवार ढंग से प्रदर्शन करता है। कृषक प्रक्रिया को देखता है, अपनी शंकाओं को दूर करने के लिए मौखिक व्याख्या को सुनता है। कृषकों की स्वयं की योग्यता के संबंध में उनके आत्मविश्वास में वृद्धि करने के लिए विस्तार कार्यकर्ता की अपस्थिति में अनेक कृषक उस प्रदर्शन को दोहराते हैं। किसी समूह को कोई कौशल सिखाने के प्रयोजन के लिए पद्धति का प्रदर्शन स्वयं विस्तार कार्यकर्ता द्वारा अथवा किसी प्रशिक्षित नेता द्वारा किया जाता है।

परिणाम प्रदर्शन

परिणाम प्रदर्शन किसी अनुशंसित प्रक्रिया अथवा प्रक्रियाओं के संयोजन के महत्व को सिद्ध करने के लिए किसी विस्तार कार्यकर्ता के प्रत्यक्ष पर्यवेक्षण के अंतर्गत कृषकों द्वारा संचालित किया जाने वाला प्रदर्शन है। कृषक के खेत पर नई प्रक्रिया की तुलना पुरानी प्रक्रिया के साथ की जाती है। यह उन्हें आश्वस्त करती है क्योंकि कृषक देखकर और स्वयं करके सीखते हैं।
परिणाम प्रदर्शनों के प्रकार

क)	अल्पावधिक	–	मछलियों की पहचान
ख)	दीर्घावधिक	–	सजावटी मछलियों का प्रजनन
ग)	साधारण प्रक्रिया	–	पीएच परीक्षण
घ)	अधिक प्रक्रिया	–	प्रक्रियाओं का संपूर्ण पैकेज

परिणाम प्रदर्शनों और पद्धति प्रदर्शनों में अंतर

कम सं.	परिणाम प्रदर्शन	पद्धति प्रदर्शन
1.	स्थानीय कृषि–भूमि में किसी अनुशंसित प्रक्रिया के महत्व को सिद्ध करना प्रमुख उद्देश्य है।	किसी संवर्धित तरीके से किसी नए कौशल या पुराने कौशल को सिखाया जाता है।
2.	इसमें कृषक प्रदर्शनकर्ता है। वह विस्तार कार्यकर्ता के मार्गदर्शन के अंतर्गत परिणाम प्रदर्शन संचालित करता हैं।	विस्तार कार्यकर्ता स्वयं अथवा प्रशिक्षित नेता प्रदर्शन करता है।
3.	कृषक प्रदर्शन संचालित करता है तथा प्रदर्शन क्षेत्र में आने वाले अन्य कृषक लाभान्वित होते हैं।	प्रदर्शन के प्रतिभागी लाभान्वित होते हैं।
4.	रिकार्डों का अनुरक्षण अनिवार्य है।	अनिवार्य नहीं है।
5.	इसे पूरा करने में अधिक समय लगता है।	तुलनात्मक दृष्टि से कम समय लगता है।
6.	इसमें अधिक लागत आती हैं।	तुलनात्मक दृष्टि से सस्ता है।
7.	परिणामों पर पर्यावरणीय कारकों का उल्लेखनीय प्रभाव होता है।	प्रभाव नहीं होता है।

क्षेत्रीय यात्रा और दौरे

दौरे तथा क्षेत्र की यात्राएं विस्तार शिक्षण की ऐसी पद्धतियां हैं जो व्यक्ति की अनेक स्थानों पर जाने और नई चीज़े देखने की इच्छा को आकर्षित करती हैं। किसी विस्तार कार्यकर्ता के साथ उसके मार्गदर्शन के अधीन रूचि रखने वाले कृषकों का समूह उनके प्राकृतिक परिवेश में संवर्धित प्रक्रियाओं को देखने तथा उनके विषय में जानकारी हासिल करने दौरों पर जाते हैं। ऐसी यात्राएं अनुसंधान कृषि–भूमिों, प्रदर्शन भूखण्डों, प्रगतिशील कृषकों के खेतों, संस्थाओं में की जा सकती हैं।

बैठकें

बैठकें विस्तार शिक्षण की सबसे प्राचीन और सर्वाधिक महत्वपूर्ण समूह–पद्धति हैं। यदि उनकी व्यवस्था और संचालन समुचित रूप से किया जाता है, तो वे किसी अन्य पद्धति की तुलना में लागत के संदर्भ में अपनाई गई प्रक्रियाओं के अनुपात में उच्च वरीयता हासिल करती हैं।

बैठक शब्द में विस्तार कार्यकर्ता द्वारा आयोजित की जाने वाली सभी प्रकार की बैठकें शामिल हैं। आकारों के अनुसार बैठकें समिति की छोटी बैठक से लेकर भोजन अथवा त्योहार के विशेष अवसरों की बैठकें शामिल हैं, जिनमें हजारों लोग भाग लेते हैं।

व्याख्यान

व्याख्यान सर्वाधिक आम प्रयोग की जाने वाली पद्धति है। व्याख्यान कम समय में अनेक व्यक्तियों को जानकारी प्रदान करने की श्रेष्ठ पद्धति है। इसकी कमजोरी यह है कि यह एक तरफा संप्रेषण पद्धति है। इस पद्धति के अंतर्गत शामिल किए जा सकने वाले विषयों की परिधि सीमित है। इसमें एक विशाल समूह के साथ संप्रेषण करने का लाभ भी शामिल है; जब एक निश्चित समय में बड़ी मात्रा में जानकारी प्रदान किया जाना आवश्यक हो, रूचि बढ़ाने के लिए नए कार्यक्रमों को आरंभ करते समय; तथ्यात्मक जानकारी प्रदान करने के लिए जब आगे अध्ययन के लिए आधार के रूप में किसी जानकारी की सामान्य पृष्ठ भूमि का वर्णन करना हो; अन्य पद्धतियों को सहायता प्रदान करने के लिए आदि के लिए व्याख्यान कौशल शिक्षण प्रभावी नहीं है; जब समूह के सदस्यों की प्रतिभागिता आवश्यक हैं; जब समस्याओं का समाधान किया जाना है; आदि।

जन संप्रेषण पद्धतियां

व्यक्तिगत, आमने–सामने की पद्धतियां तथा समूह पद्धतियां उस प्रत्येक व्यक्ति तक नहीं पहुंच सकती जिसे जानकारी की आवश्यकता और जरूरत होती है। अतः बड़ी संख्या में लोगों तक पहुंचने के लिए जन संप्रेषण पद्धतियों जैसे प्रदर्शनी, रेडियो वार्ता, टेलीविजन वार्ता का तथा मुद्रित सामग्री जैसे समाचार लेख, रूपक लेख, विवरणिकाएं, फोल्डर, हस्तक, पुस्तिकाएं आदि।

यह पद्धति नए विचारों तथा प्रौद्योगियों के विषय में बड़ी संख्या में कृषकों को जानकारी प्रदान करती हैं अथवा उन्हें अकस्मात घटने वाली आपातकालीन स्थितियों के विषय में सतर्क करती हैं। हालांकि जन–समाचार माध्यम द्वारा संप्रेषित की जाने वाली विस्तृत जानकारी की मात्रा सीमित होती है, फिर भी वे नई प्रक्रियाओं के प्रति कृषकों की रूचि को जागृत करने के लिए एक महत्वपूर्ण और मूल्यवान उपकरण के रूप में कार्य करती हैं। जन–समाचार माध्यम द्वारा एक बार उत्प्रेरित होने पर कृषक अपने पड़ोसियों, मित्रों, विस्तार कार्यकर्ताओं अथवा उनके आस–पड़ोस में अन्य प्रगतिशील कृषकों से अतिरिक्त जानकारी प्राप्त करते हैं। उक्त संदर्भित जन संप्रेषण प्रद्धतियों का प्रयोग प्रस्तावित उद्‌देश्यों की प्राप्ति के लिए आवश्यकतानुसार एकल अथवा संयोजित रूप में किया जा सकता है।

प्रदर्शन

एक प्रदर्शनी मॉडलों, नमूनों, चार्टों, सूचना, पोस्टरों आदि का श्रृंखलाबद्ध रूप में किया गया व्यवस्थित प्रदर्शन है तथा यह प्रतिभागी सदस्यों को शिक्षण प्रदान करने और उनके मध्य रूचि का सृजन करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण साधन है। प्रदर्शनी विस्तार शिक्षा की तीन अवस्थाओं को कवर करती है अर्थात् रूचि पैदा करना, सीखने के प्रति इच्छा जागृत करना तथा निर्णय लेने का अवसर प्रदान करना। प्रदर्शनी आयोजित करने के लिए मेलों और त्योहारों का सामान्यतः प्रयोग किया जाता है।

रेडियो/टेलीविजन वार्ता

यह कृषकों को तकनीकी जानकारी और अभिनवता के विषय में सूचित करने का एक त्वरित तरीका है।

प्रिंट मीडिया

प्रिंट मीडिया ऐसी संप्रेषण तकनीक है जो मुख्य रूप से मुद्रित शब्दों और चित्रों के संयोजन पर निर्भर रहती है। यह हमारा सर्वाधिक प्राचीन औपचारिक संयोजन है। इस पद्धति को प्रभावशाली रूप से लागू करने के लिए जनता के शैक्षणिक स्तरों और साक्षरता दर पर अवश्य विचार कर लिया जाना चाहिए। विस्तार कार्यक्रम जनता को समाचार संप्रेषित करने के लिए मुद्रण पद्धतियों का प्रयोग करने के लिए व्यापक और सृजनात्मक दृष्टिकोण अपना सकते हैं।

बोले गए शब्द जल्द ही भुला दिए जाते हैं। विस्तार कार्यकर्ताओं तथा कृषकों के बीच लगभग 35 प्रतिशत कृषि संबंधी जानकारी की हानि पाई गई। प्रभावशाली संप्रेषण के लिए, लिखित पद्धतियां उपयोगी होती हैं। अतः लिखित पद्धतियों का प्रयोग तथ्यों का वर्णन करने के लिए विस्तार शिक्षण में इस प्रकार किया जाता है कि कृषकों का ध्यान आकर्षित किया जा सके, वे लिखी गई बात को समझें, उसे याद रखें और अंत में उन्हें वह जानकारी अनुकूल निर्णय लेने में मदद कर सके। इसके अलावा, लिखित संप्रेषण पारेषण के दौरान जानकारी की हानि को भी कम करता है तथा साथ ही, इसमें एक अल्प समय के भीतर बड़ी संख्या में लोगों को कवर भी किया जाता है।

फोल्डर

फोल्डर कागज का एक टुकड़ा होता है, जिसे एक या दो बार मोड़ा जाता है और जब इसे खोलते हैं, तो प्रस्तुत की गई सामग्री श्रृंखलाबद्ध रूप में सामने आती है।

पुस्तिका

पुस्तिका का आकार 2 से लेकर 12 पृष्ठों तक का हो सकता है। इसके आवरण पृष्ठ को दो या तीन रंगों में छापा जाना चाहिए जिसमें कोई तस्वीर अवश्य हो। चयनित विषय के बारे में पूर्ण जानकारी विस्तारपूर्वक प्रस्तुत की जाती है। जब इसकी तुलना फोल्डर से की जाती है, तो पुस्तिका कृषकों की आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से पूरा करने में सफल रहती है।

समाचार–पत्रक

समाचार–पत्रक में बड़ी मात्रा में जानकारी निहित होती है। इसका प्राथमिक लक्ष्य ऐसी जानकारी प्रदान करना है जिसे पाठक अपनी स्थानीय परिस्थिति में उपयोग में ला सके। इसका आकार 12 से 2 पृष्ठ तक का हो सकता है।

बुकलेट

जब सामग्री अधिक हो और वह 20 पृष्ठों से लेकर 50 पृष्ठों तक सीमित हो, तो उसे बुकलेट कहा जाता है।

परिचालन पत्र

परिचालन पत्र विस्तार कार्यकर्ता द्वारा लिखा गया तथा अनेक कृषकों को आवधिक रूप से अथवा विशेष अवसरों पर भेजा जाता है।

समाचार–पत्रक

समाचार–पत्रक पाठकों तक पहुंचने का एक प्रभावशाली और किफायती तरीका है। समाचार–पत्रक की विषय–वस्तु किसी सामान्य समाचारपत्र की तुलना में अधिक स्थानीय और विशेषीकृत हो सकती है। समाचार–पत्रक में हस्तलिखित, टाइप की गई अथवा टाइप–सेट प्रति शामिल हो सकती हैं। अनुकरण पद्धतियां भी पर्याप्त रूप से भिन्न हो सकती हैं। वस्तुतः पाठकों

को किसी समाचार–पत्रक में संक्षिप्त सामग्री का लाभ प्राप्त होता है। समाचार–पत्रक तत्काल ही प्रत्येक विषय के बारे में वर्णन करने का प्रयास करते हैं तथा छोटे वाक्यों और उत्साहवर्धक शब्दों का प्रयोग करते हैं।